International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 8 Ver. I || August. 2018 || PP 98-102

राजनीतिक विचारधारा

डॉ0 राधिका देवी
विभागाध्यक्ष(राजनीति विज्ञान)
ए0के0पी0(पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा
जिला–बुलन्दषहर (उ0प्र0)

विचार और विचारधारा का जन्म शून्य में नहीं होता है। उसका सम्बन्ध मानव तथा उसके सामाजिक परिवेश से होता है। मानव एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ विवेकशील प्राणी भी है। उसमें बुद्धि तत्व के साथ–साथ भवना तत्व भी होता है। उसकी अपने सामाजिक वातावरण में निरन्तर अन्तःक्रिया होती रहती है। इसी अन्तःक्रिया (Inter-action) के फलस्वरूप विचार एवं विचारधाराएं जन्म लेती हैं।

प्रमुख विचारक अपने विचारों को या तो स्वयं ही किसी विशेष विचारधारा का नाम दे देते हैं अथवा उनके अनुयायी उनके विचारों की विचारधारा का अवरण पहना देते हैं। जैसे महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और नैतिक साधनों पर आधारित चिन्तन को उनके अनुयायियों ने गांधीवाद की संज्ञा दी तथा कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष और सामाजिक–आर्थिक न्याय पर आधारित चिन्तन को वैज्ञानिक समाजवाद या मार्क्सवाद का नाम दिया।

प्रो. सी. बी. मेक्फर्सन लिखते हैं, ''विचारधारा का अस्तित्व प्राचीनकाल में भी था, लेकिन विचारधारा शब्द का अधिक प्रचलन वर्तमान समय में ही हुआ है। वर्तमान समय में विचारधाराओं में जन–आन्दोलन की प्रेरणा दी है।''[1] वर्तमान में विचारधाराओं के युग का आरम्भ 18वीं सदी में फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति से माना जाता है। **एम.वाटकिन्स** के शब्दों में, ''विगत दो शताब्दियों से पाश्चात्य जगत् अशान्ति के काल में रह रहा हैं, जिसे विचारधाराओं का युग कहा जा सकता है।''[2] बीसवीं सदी के नवें दशक तक तो स्थिति यह थी कि समस्त राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विवादों तथा संघर्षों का विश्लेषण विचारधारा के आधार पर किया जा रहा था। कुछ विचारधाराओं में तो परस्पर प्रबल मतभेद की स्थिति थी और ऐसा माना जाता था कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का तो समस्त घटनाचक्र पूंजीवाद बनाम साम्यवादी विचारधारा के आपसी संघर्ष का परिणाम है।

राजनीति विज्ञान में विचारधारा शब्द आधुनिक है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 18वीं शताब्दी के अन्त में फ्रांसीसी विचारक **डेस्टट दि ट्रेसी** ने किया था। विचारधारा से उसका अभिप्राय **असंदिग्ध सत्य** से था, यानी सन्देहरहित सत्य अथवा परम सत्य।[3]

विचारधारा अत्यन्त व्यापक शब्द है। इसका कलैवर अत्यन्त विस्तृत होते हुए भी अस्पष्ट है,पूर्ण सत्य को अभिव्यक्त नहीं करता है,और दार्शनिक तथा वैचारिक जटिलतओं से परिपूर्ण है।

स्ट्राज ह्यूप एवं**पॉसनी** के अनुसार, ''विचारधारा सिद्धान्तों और प्रतीकों का समूह है जिसमें विश्व की सामाजिक समीक्षा के साथ–साथ भविष्य के आदर्श समाज अथवा राज व्यवस्था का विवेचन किया जाता है, जिसके अनुरूप समाज की व्यवस्था की जाए।''[4]

डेनियल बैल के मतानुसार, ''विचारधारा का अर्थ विचारों को समाज में प्रभाव उत्पन्न करने वाले साधनों में रूपान्तरित करना है। एक विचारक के लिए सत्य उसके कार्य में निहित रहता है।''[5]

स्नाइडर एवं**विल्सन** के शब्दों में, ''एक विचारधारा जीवन, समाज और शासन के प्रति निश्चित विचारों का वह समूह है जिसका प्रचार मुख्यतया योजनाबद्ध सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक नारों के प्रतिपादन के रूप में इस प्रकार किया जाता है कि मानो वह एक विशिष्ट समाज, समुदाय, दल अथवा राष्ट्र के विशिष्ट विश्वास ही बन गए हों।''[6] जैसे, भारत के राजनेता उपदेशात्मक भाषा में बोलते हैं कि भारत की राजनीति संस्कृति लोकतन्त्र, समाजवाद और पन्थ निरपेक्षता पर आधारित है।

एलेन बालके शब्दों में, ''जबवे राजनीतिक विचार (विभिन्न विषयों एवं समस्याओं से सम्बन्धित) स्पष्टतया व्यक्त, सम्बद्ध और व्यवस्थित प्रतिरूप धारण कर लेते हैं तो हम उन्हें राजनीतिक विचारधाराएं कहने लगते हैं। उन्हें 'विचारों की सक्रियता–सम्बद्ध पद्धतियां' कहा गया है––इस अर्थ में कि वे मौजूदा राजनीतिक संरचनाओं तथा सम्बन्धों के परिवर्तन या उनकी रक्षा से सम्बन्धित विचारों के समूह होते हैं। सब विचारधाराएं राजनीतिक सत्ता के लिए वितरण के स्वरूप से सम्बन्धित होती हैं।''[7]

समाजिक समूह के व्यवहार को संचालित करने वाले विचारों के समुच्चय के रूप में विचारधारा की परिभाषा अनेक लेखकों ने की है। जैसे, बी.के गोखले के शब्दों में, ''विचारधारा विचारों की एक व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत व्यक्तियों का समूह जीवन के प्रति सदाचार, नैतिक सिद्धान्त, विधि और दर्शन सम्बन्धी विचार एवं आकांक्षाएं रखता है।''[8]

रोंडी, एण्डरसन एवं **क्रिस्टोल** के शब्दों में, ''एक राजनीतिक विचारधारा विचारों की व्यवस्था है जो राज्य की प्रकृति की विवेचना करती हैं तथा राज्य के नागरिकों तथा शासन के मध्य सम्बन्धों का वर्णन करती है। ऐसी विचारधारा राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों का समुच्चय होती है।''[9]

इस प्रकार विचारधारा का कोई एक निश्चित और स्पष्ट अर्थ नहीं है। निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि **विचारधारा विचारों का विज्ञान है जो मानव स्वभाव और सामाजिक परिवर्तनों की व्याख्या करती है। और भविष्य में आदर्श समाज की व्यवस्था तथा उस व्यवस्था की प्राप्ति के लिए साधन–पद्धतियों का भी वर्णन करती है।**

राजनीतिक विचारधारा की प्रकृति

- आधुनिक युग में विचारधारा का युग फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति (1789) से प्रारम्भ होता है। इस क्रान्ति ने विश्व को सर्वप्रथम समानता, स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व, राष्ट्रवाद और लोकतन्त्र का सन्देश दिया।
- विचार और विचारधाराओं की उत्पति मानव और उसके सामाजिक पर्यावरण में अन्तः क्रिया के कारण होती है। विचारों का जन्म तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक मूल्यों और संरचनाओं के औचित्य की व्याख्या करने के लिए होता है अथवा प्रचलित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था एवं मूल्यों के परिवर्तन के लिए होता है। जैसे, व्यक्तिवाद और पूंजीवाद को साधारणतया परिवर्तन विरोधी तथा समाजवाद को परिवर्तनवादी विचारधारा माना जाता है।

- कोई भी राजनीतिक विचारधारा सम्पूर्ण रूप से पूर्ण सत्य को अभिव्यक्त नहीं करती है। वस्तुतः कोई भी विचारधारा अपने आप में पूर्ण नहीं है। यद्यपि वे सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं के निदान तथा समाधान का दावा करती है।
- राजनीतिक विचारधारा को ''सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक नियन्त्रण का साधन' भी माना जाता है। यदि समाजवाद, साम्यवाद तथा मार्क्सवाद की विचारधाराएं राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था के सम्पूर्ण परिवर्तन का माध्यम मानी जाती हैं तो सर्वाधिकारवादी विचारधाराएं (फांसीवाद, नाजीवाद) सामाजिक नियन्त्रण का साधन हैं।
- 'पॉलिटिक्स अमंग नेशन्स' (Politics Among Nations)ग्रन्थ के प्रख्यात लेखक **हंस जे. मारगेन्थाऊ** के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विचारधारा को विदेश नीति के वास्तविक उद्देश्य छिपाने का आवरण कहा जा सकता है। जैसे, प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश प्रधानमन्त्री लॉयड जार्ज तथा अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन ने कहा है कि वे लोकतन्त्र और राष्ट्रीय आत्मनिर्णय जैसी उदारवादी विचारधाराओं की रक्षा के लिए जर्मनी के विरूद्ध युद्ध लड़ेथे। राष्ट्रपति विल्सन के चौदह सूत्रों (विचारधारा) ने प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों के मनोबल को बढ़ाकर जर्मनी के विरूद्ध उनकी विजय में अत्यधिक योगदान किया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों ने धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, जापान, इटली) के विरूद्ध अपने पक्ष को लोकतन्त्र बनाम फांसीवाद के विरूद्ध युद्ध की संज्ञा दी। इसी प्रकार जर्मनी के अधिनायक हिटलर ने अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को आत्मनिर्णय के सिद्धान्त का आवरण पहनाते हुए आस्ट्रिया, चैकोस्लोवाकिया और पोलैण्ड पर अधिकार दिया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ में भीषण शीतयुद्ध प्रारम्भ हो गया। दोनों महाशक्तियों ने विचारधारा के आवरण में शक्ति की राजनीति, प्रभावक्षेत्र को बढ़ाने के लिए साम्राज्यवादी एवं नव–उपनिवेशवादी नीति तथा शस्त्रीकरण एवं अणुशक्ति में वृद्धि की नीति को अपनाया, परन्तु अपनी विदेश नीति के यथार्थ स्वरूप (शक्ति की राजनीति) को छिपाने के लिए अमेरिका ने स्वतन्त्र विश्व की विचारधारा तथा सोवियत संघ ने साम्राज्यवाद तथा उपनिवेश विरोधी विचारधारा के आवरण को पहने रखा।

- प्रतिक्रिया, विचार और विचारधारा में सूक्ष्म अन्तर पाया जाता है। चिन्तनशील तथा भावना प्रधान होने के कारण मानव विभिन्न समस्याओं(राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आदि) के प्रति सर्वप्रथम अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जब प्रतिक्रिया तर्कबुद्धिपरक स्वरूप ग्रहण कर लेती है तो उसे विचार कहा जाता है। जब राजनीतिक विचार स्पष्टतया व्यक्त, सम्बद्ध और व्यवस्थित प्रतिरूप धारण कर लेते हैं तो उसे विचारधारा कहा जाता है। इस प्रकार विचारधारा को विचारों का विज्ञान (Science of Ideas) कहा जाता है।
- विचारधारा का उदय, विकास और उत्कर्ष सामाजिक पर्यावरण की प्रकृति के अनुरूप होता है। वस्तुतः की सामाजिक चेतना विचारधारा का प्रमुख स्रोत होती है। अब्राहम लिंकन, नेपोलियन बोनापार्ट, मैजिनी, टालस्टाय, वी.डी.सावरकर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, नेल्सन मण्डेला, आदि जननेताओं ने अपने व्यक्तित्व तथा कृतिव से राजनीतिक विचारधाराओं के जन्म में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत की है।
- समस्त विचारधाराओं की प्रकृति एक समान(सजातीय) नहीं होती है। अतः राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके मध्य प्रबल मतभेद पाया जाता है। परस्पर विरोधी विचारधाराओं की इस स्थिति को हम **'विचारधाराओं के संघर्ष'** की संज्ञा दे सकते है।

रूस की बोलशेविक क्रान्ति (1917) के बाद विश्व में पूंजीवाद बनाम साम्यवादी विचारधारा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष का उदय हुआ। इस संघर्ष का उत्कर्ष द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शीतयुद्ध के समय में देखा जा सकता हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध मित्र राष्ट्रों और धुरी राष्ट्रों के मध्य लोकतन्त्र बनाम अधिनायकवादी विचारधारा के संघर्ष का प्रतीक था, परन्तु पूंजीवाद बनाम साम्यवादी विचारधारा के मध्य संघर्ष ने सारे विश्व को लपेट लिया। दोनों विचारधाराएं एक–दूसरे की विलोम हैं। पूंजीवाद में उत्पादन के साधनों पर व्यक्ति का स्वामित्व रहता है, जबकि साम्यवादी विचारधारा उत्पादन के साधनों पर राज्य के स्वामित्व पर बल देती हैं। पूंजीवाद के अनुसार साम्यवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति दास के समान हो जाती है। आर्थिक उत्पादन के लिए प्रेरणा के अभाव में अर्थव्यवस्था में सुधार नहीं हो पाता है। साम्यवादी विचारधारा के अनुसार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूंजीपति अपने लाभ के लिए श्रमिकों का शोषण करते हैं तथा राज्य पूंजीपतियों के हितों की रक्षा हेतु एक यन्त्र के रूप में कार्य करता है।

भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के कालखण्ड में गोखले के नेतृत्व में उदार राष्ट्रीयता तथा तिलक के नेतृत्व में उग्र राष्ट्रीयता के बीच गहरा विवाद चलता रहा। इसी प्रकार आजादी प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में संवैधानिक साधनों तथा क्रान्तिकारियों के क्रान्ति–चिंन्तन तथा क्रान्ति–कर्म के बीच वैचारिक संघर्ष चलता रहा। सावरकर बन्धुओं, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, हरदयाल आदि क्रान्तिकारियों ने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा तथा नैतिक साधनों पर आधारित सत्याग्रह की राजनीति का प्रबल विरोध किया था।

- सर्वाधिकारवादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक विचारधारा पर विशेष बल दिया जाता है, यही उनका प्रमुख लक्षण होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा पश्चिम के उदारवादी लोकतन्त्रों में विचारधाराओं की भूमिका कम स्पष्ट दिखाई देती हैं, क्योंकि उदारवादी लोकतन्त्र का बहुलवाद सर्वाधिकारवादी राज्यों में विचारधारा द्वारा अनुशासित सामाजिक व्यवहार को स्वीकार नहीं करता हैं।
- राजनीतिक यथार्थ के सन्दर्भ में विचारधारा की कठोरता में संशोधन करना पड़ता हैं। जैसे, स्टालिन ने विश्वव्यापी साम्यवादी क्रान्ति के सिद्धान्त को ठुकरा कर 'एक देश में समाजवाद' के सिद्धान्त को स्वीकार किया। इसी प्रकार उसने 'राज्य के धीरे–धीरे लोप हो जाने'' के साम्यवादी सिद्धान्त को भी इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया कि सोवियत संघ चारों तरफ से पूंजीवादी देशों से घिरा हुआ है। अतः सोवियत संघ में राज्य के लोप होने की सम्भावना नहीं है।
- राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रिया में भ्रष्ट या अक्षम भूमिका के कारण विचारधारा में आमूल परिवर्तन करना पड़ता है, अन्यथा विचारधारा की मृत्यु हो सकती है।

1917 में लेनिन और बोल्शेविकों की विजय के बाद मार्क्सवाद–लेनिनवाद सोवियत संघ का शासकीय राजनीतिक सिद्धान्त बन गया था, परन्तु 1990–91 में पूर्वी यूरोप में मार्क्सवाद के महल का विध्वंस हो गया और अन्ततः 1991 में मार्क्सवाद–लैनिनवाद का वैचारिक तथा शक्ति केन्द्र सोवियत संघ भी टूट गया। मार्क्सवाद जैसी ठोस और सशक्त राजनैतिक विचारधारा के पतन के अनेक कारण हो सकते हैं। इस सन्दर्भ में प्रमुख तर्क यह है कि मार्क्सवाद अपनी रूढ़िगत व्याख्या के कारण न तो सोवियत अर्थव्यवस्था

को सुधार सका और न विश्व अर्थव्यवस्था में परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को संशोधित कर सका। मार्क्सवाद–लैनिनवाद के पतन से यह सिद्ध हो गया कि किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता–अखण्डता का एकमात्र आधार कोई विचारधारा नहीं हो सकती है।

- ''राजनैतिक विचारधाराओं के पास अपने प्रतीक, पुराण और विशिष्ट नायक होते हैं और सब विचारधाराओं का स्वर अनिवार्यतः नैतिक होता है।''[10] जैसे, साम्यवाद के पैगम्बर मार्क्स और एंजिल्स है उसके नायक लेनिन, स्टालिन, माओ, खुश्चेव, ब्रेझनेव, आदि हैं तथा उसके पुराण 'दास कैपिटल' और 'साम्यवादी घोषणापत्र' (1848) हैं। श्रम की प्रधानता देने वाला 'हंसिया तथा हथोड़ा' उसका प्रतीक है।
- आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं में विचारधाराओं का मुख्य कार्य वर्तमान राजनीतिक संस्थाओं की वैधता प्रदान करना है।जैसे, अरब देशों की इस्लामी विचारधारा ने वहां की राजनीतिक–सामाजिक संस्थाओं को औचित्य तथा वैधता प्रदान की है। इसके अलावा विचारधाराएं परिवर्तन को भी अपनाने तथा उसकी व्याख्या करने में सहायक होती हैं। इस सन्दर्भ में राजनीतिक दलों की भूमिका प्रभावी होती हैं।

- प्रकृति के आधार पर राजनीतिक विचारधाराओं का वर्गीकरण निम्नलिखित युग्मों में किया जा सकता है :
  - आदर्शवादी बनाम यथार्थवादी या आनुभविक विचारधारा,
  - उदारवादी बनाम अनुदारवादी विचारधारा,
  - लोकतन्त्र बनाम सर्वाधिकारवादी विचारधारा,
  - पूंजीवाद बनाम समाजवाद एवं साम्यवाद,
  - संवैधानिक बनाम क्रान्तिकारी विचारधारा, आदि।

- उदारवादी लोकतन्त्रों तथा औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में विचारधारा सम्बन्धी प्रतिबद्धता न्यूनतम पाई जाती है। अब यह कहा जाने लगा है कि ''विचारधारा के युग का अन्त'' हो गया है। प्रमुख समस्या विचारधारा की नहीं, बल्कि आर्थिक–औद्योगिक तकनीकी उन्नति तथा प्रबन्ध की है।
- विचारधारा राष्ट्रीय शक्ति का तत्व है। यह राष्ट्र के लोगों को जोड़ने में सीमेण्ट का कार्य करती है। विचारधारा से नागरिकों में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना पैदा होती है तथा युद्धकाल में उनका मनोबल बना रहता है। इससे सरकार को अपने नागरिकों का समर्थन प्राप्त करने में सहायता मिलती है।
- विचारधारा का नागरिकों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि उन्हें विचारधारा सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान हो। साधारणतया औसत व्यक्ति विचारधारा के मूल तत्वों को समझे बिना उसका समर्थन या अनुकरण करता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय जीवनधारा में विचारधारा का महत्व अवश्य होता है। लोकतान्त्रिक तथा सर्वाधिकारवादी राज्यों में उनकी प्रकृति भिन्न–भिन्न होती है। प्रकृति की भिन्नता के कारण विचारधाराओं में परस्पर संघर्ष पाया जाता है।

- आधुनिक युग में राजनीतिक विचारधाराएं किसी एक राष्ट्र की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रहती, वरन् वे राष्ट्रीय सीमाओं के परे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के चिन्तन को प्रभावित करती हैं। जैसे, समाजवाद, पूंजीवाद लोकतन्त्र, लोकतान्त्रिक समाजवाद, आदि।[11]

राजनीतिक विचारधारा के स्रोत

- **राजनीतिक विचारक– राजनीतिक विचारधाराओं के एक नहीं, अनेक स्रोत होते हैं।** प्राचीन राजनीतिक विचारधारा का मुख्य स्रोत यूनान का राजनीतिक चिन्तन ही था। प्रख्यात राजशास्त्र विशारद बार्कर का कथन हैं, ''राजनीतिक चिन्तन का प्रारम्भ यूनानियों से हुआ है। इसकी उत्पति यूनानियों के शान्त एवं स्पष्ट बुद्धिवाद से सम्बन्धित हैं।''[12] प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधाराओं के मुख्य स्रोतों में वेद, स्मृतियां, मनु, बाल्मीकि, सोमदेव, कौटिल्य, शुक्र का राजनीतिक चिन्तन तथा रामायण में वर्णित राजनीतिक विचारों की गणना की जाएगी। पाश्चात्य प्राचीन राजनीतिक विचारधारा के मुख्य स्रोत सोफिस्टों तथा सुकरात का राजनीतिक चिन्तन, प्लेटो का ग्रन्थ 'रिपब्लिक' (Republic)अरस्तू का ग्रन्थ 'पॉलिटिक्स' (Politics)एपीक्यूरियन तथा स्टोइक का राजनीतिक दर्शन, रोमन राजनीतिक विचारक, पोलीबियस, सिसरो और सेनेका का राजनीतिक चिन्तन है।

मध्यकालीन पाश्चात्य राजनीतिक विचारधाराओं पर प्रारम्भिक ईसाई धर्म के विचारक सन्त अम्ब्रोज तथा सन्त आगस्टाइन के राजनीतिक दर्शन का गहन प्रभाव पड़ा। उत्तर मध्यकालीन पाश्चात्य चिन्तन के प्रमुख स्रोत सन्त थामस एक्विनास, जॉन सैलिसबरी, मार्सीग्लियो ऑफ पेडुआ, जॉन ऑफ पेरिस, दान्ते, आदि की राजनीतिक विचारधाराएं हैं।

आधुनिक पाश्चात्य राजनीतिक विचारधाराओं के प्रमुख स्रोत मैकियावेली (1469–1527), थॉमस हॉब्स (1588–1679), जॉन लॉक (1632–1704), जीन जेक्स रूसो (1712–1778) बेन्थम (1748–1832), जे.एस.मिल (1806–1873), टी.एच.ग्रीन (1836–1832), कार्ल मार्क्स (1819–1833), फ्रेडरिक हींगल (1770–1831), आदि राजनीतिक विचारक हैं।[13]

इन विचारकों के ग्रन्थों ने आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं की प्रकृति को अत्यधिक प्रभावित किया है। जैसे, मैकियावेली की *"Prince"*, हॉब्स की *"Leviathan"*, लॉक की *"Two Treatises on Government"*,रूसो की *"Social Contract"*, मॉण्टेस्क्यू की*"Spirit of Laws"*, बेन्थम की*"The Introduction to Morals and Legislation"*, जे.एस. मिल की*"Liberty"*, ग्रीन की *"Communist Monifasto"*, तथा *"Das Capital"*, (तीन खण्ड), आदि पुस्तकों ने आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[14]

आधुनिक पाश्चात्य राजनीतिक विचारधारा, आन्दोलन या उपागम का केन्द्रबिन्दु व्यवहारवाद *(Behaviouralism)* है। व्यवहारवाद के विकास में मुख्य योगदान ग्राहम वालास *(Human Nature in Politics, 1908)*, आर्थर बैन्टले *(The Process of Government 1908)*, चार्ल्स मेरियम *(New Aspects of Politics, 1925)* लासवेल और केपलान *(Power and Society, 1950)* डेविट ईस्टन*(The Political System, 1953)* रॉबर्ट ए. डहाल*(Modern Political Analysis, 1963)* हेराल्ड लासवेल *(The Analysis of Political Behaviour, 1948)* आमण्ड एवं कोलमेन*(The Politics of the Developing Areas, 1960)*आमण्ड एवं पॉवेल *(Comparatice Politics, 1966)* मॉर्टन कैप्लान*(System and Process in International Politics, 1957)* टालकोट पारसन्स*(The Social*

System, 1951) ओरन यंग *(Systems of Political Science)* डेविड एप्टर *(The Political of Modernization, 1965)* आदि राजवैज्ञानिकों के ग्रन्थों का रहा।[15]

वास्तव में आधुनिक राजवैज्ञानिकों ने व्यवहारवाद के अन्तर्गत राजनीति विज्ञान की वैज्ञानिक अध्ययन पद्धतियों का सराहनीय विकास किया। इसके अलावा उन्होंने आधुनिकीकरण, राजनीतिक, सांस्कृतिक विकास, राजनीतिक समाजीकरण, अभिजन वर्ग आदि के बारे में आधुनिक दृष्टिकोण से गम्भीर अध्ययन किया।

आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधाराओं के विकास में स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883) राजा राममोहन राय (1772–1833), एनी बेसेन्ट(1847–1933),रविन्द्रनाथ ठाकुर(1861–1941), स्वामी विवेकानन्द(1863–1902), दादाभाई नौरोजी(1824–1927),महादेव गोविन्द रानाडे(1842–1901), गोपालकृष्ण गोखले(1866–1915),बाल गंगाधर तिलक(1856–1920), लाला लाजपतराय(1865–1928), श्री अरविन्द(1872–1950), महात्मा गांधी(1869–1948), वी.डी.सावरकर(1883–1966), जवाहरलाल नेहरू(1889–1964), एम.एन.राय(1887–1954),और जयप्रकाश नारायण के सामाजिक राजनीतिक चिन्तन का विशेष योगदान रहा है। हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा के विकास श्रेय बंकिमचन्द्र चटर्जी(1838–1994)को है। परतन्त्र भारत में राष्ट्रवाद के दर्शन की दो प्रकार की धाराओं का विकास हुआ–पन्थनिरपेक्ष राष्ट्रीय चिन्तन और साम्प्रदायिक राष्ट्रीय विचारधारा।[16]

- **राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अभिलेख–** राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय, राजनीतिक संस्थाओं द्वारा पारित प्रस्ताव तथा देश का संविधान राजनीतिक विचारधारा के अन्य महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

अ.भा. राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन के कालखण्ड में समय–समय पर पारित प्रस्ताव, संयुक्त राष्ट्र संघ का संविधान (चार्टर), अ.भा. हिन्दू महासभा द्वारा पारित प्रस्ताव, स्वतन्त्र भारत में कांग्रेस द्वारा लोकतान्त्रिक समाजवाद सम्बन्धी पारित प्रस्तावों ने राजनैतिक विचारधारा के उदय एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ब्रिटेन के संवैधानिक विकास में महान् चार्टरों(Great Charters) ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई जैसे मेग्नाकार्ट (महान् आज्ञापत्र, 1215), अधिकारों का याचनापत्र (1628), अधिकारों का बिल (1689), आदि ने ब्रिटेन में उदारवादी लोकतन्त्र के विकास में अवदान दिया। गैटेल के शब्दों में, ''राज्यों के कार्यालय–अभिलेख राजनीतिक विचारधारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत का काम करते हैं। इनमें लिखित संविधान, संसदीय विधि अध्यदेश, न्यायिक निर्णय, घोषणा–पत्र, विभागीय सूचनाएं, सन्धियां, राजनयिक पत्र–व्यवहार, आदि शामिल हैं।[17]

- **धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रन्थ–** वेद, उपनिषद, गीता, पुराण, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, शुक्र, नीतिसार, कामन्दक नीतिसार, कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने भारतीय राजनैतिक विचारधाराओं के उदय में योगदान दिया। बाइबिल और कुरान शरीफ में निहित विचारों ने ईसाई तथा इस्लामिक विचारधारा का बीजारोपण किया।

थॉमस मूर की पुस्तक 'यूटोपिया' (1516) ने यूटोपियन समाजवादी विचारधारा के निर्माण में योगदान दिया। महात्मा गांधी की सत्याग्रह की राजनीतिक विचारधारा के स्रोत डेविड थोरो (1817–1862) की "Essay on Civil Disobedience" तथा जॉन रस्किन की "Unto This Last" और टालस्टाय (1828–1910) की पुस्तक "The Kingdom of God us Within You" है।[18]

- **राजनेता–** किसी भी देश के जननेता अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व के कारण राजनीतिक विचारधारा के उदय में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अमेरिका में अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर किंग ने, फ्रांस में नेपोलियन बोनापार्ट ने, रूस में लेनिन ने और भारत में महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू के विचारों ने राजनीतिक चिन्तन को प्रभावित किया।

भारत में गांधीजी के चिन्तन के आधार पर गांधीवाद तथा सर्वोदय की राजनीतिक विचारधारा का उदय हुआ। पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लोकतान्त्रिक समाजवाद के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

इस प्रकार राजनीतिक विचारधाराओं के उदय और विकास में राजनीतिक विचारकों के चिन्तन, जननेताओं के प्रचलित सामाजिक–राजनीतिक संरचनाओं के बारे में विचार और महान् धार्मिक तथा लौकिक ग्रन्थों में निहित उपदेश, आदि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

❖❖❖

संदर्भ सूची :–

1– "Idologies prevailed in ancient times also;but it was only in recent times that the term ideology came into wide currency, In modern times, ideologies have been able to inspire mass-movements." –C.B. Macpherson, Democratic Theory: Essays in Retrieval (Clarendon Press, Oxoford, 1974) P. -158.

2- "For the past two centuries, the western world has been living through a time of troubles, that might well be called : The Age of Ideologies." - M. Watkins
The Age of Ideologies-Political Thought 1750 to the Present (1965), p.1.

3– Preston King, An Ideological Fallacy in Politics and Experience (1968), p. 341.

4– Strausz Hupe and Passsony, International Relations, pp 417-18.

5– Daniel Bell, The End of Ideology, pp. 370-71.

6– Richard C. Snyder and H. Hubert Wilson, Roots of Political Behaviour (New York, 1949), p.511.

7– एलेन बाल, आधुनिक राजनीतिक और शासन (मैकमिलन, दिल्ली, 1971), पृ. 255.

8– "Ideology may be regarded as a system of ideas and the particular way in which a group of people views life as regards hopes and aspirations, ethical and moral principles, law and philosophy (b) An ideology is a body of ideas, which in the contemporary times governs the

behavior of a social group and this is opposed by bodies of ideas of other groups." - B.K. Gokhale, A Study of Political Theory (Bombay, 1979),p. 415.

9– "A Political ideology is a system of ideas characterizing the nature of the state and describing the relationship between the government and the citizens of this state. Such an ideology embraces a ser of political, economic, social, cultural and moral values." *- Introduction of Political Science (1957), p. 538*

10- एलेन बाल, आधुनिक राजनीति और शासन पृ. 260.

11- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 355.

12- "Political thought begins with the Greeks Its origin is connected with the calm and clear rationalism of the Greek mind." *-Barker, Greek Political Theory.*

13- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 355.

14- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन,आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 355.

15- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन,आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 356.

16- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन,आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 356.

17- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन,आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 356.

18- डॉ0 बी.एल.फड़िया और डॉ0 पुखराज जैन,आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, पृ. 357.